भारत की कम्युनिस्ट पार्टी माओवादी (माओवादी)

केन्द्र कमेटि

क्रांतिकारी संयुक्त मोर्चे के सहायक सचिव प्रोफेसर साईबाबा की महाराष्ट्र पुलिस द्वारा गिरफ्तारी की हम तीव्र भर्त्सना करते हुए उनकी रिहाई के लिए जनवादी आंदोलन खड़ा करने का आह्वान देते हैं!

प्रेस विज्ञप्ति

महाराष्ट्र की पुलिस, क्रांतिकारी आंदोलन की सफाई के मंशे से अपराध के तमाम सीमाओं को पार कर रही है। दर्जनों क्रांतिकारियों की फर्जी मुठभेड़ों में हत्या कर रही है। टाडा, पोटा, माकोका जैसे काला कानूनों के तहत सैकड़ों किसानों की गिरफ्तार करना तथा उन्हें अमानवीय यातनाएं देकर जेल भेजना उनके लिए मनोरंजन का खेल बन गया है। पुलिस हिरासत हो या जेल क्रांतिकारियों की हत्या करना उनके लिए आम बात हो गई है। महाराष्ट्र राज्य, महिलाओं पर अत्याचार के मामले में देश राजधानी दिल्ली से होड़ लगाया है। महाराष्ट्र के विदर्भ क्षेत्र में क्रांतिकारी आंदोलन खड़ा करने वाले हमारे पार्टी के कार्यकर्ताओं के साथ–साथ किसानों, कामगारों, छात्रों, बुध्दिजीवियों, कलाकारों तथा लेखकों को हैरान–परेशान करना, तंग करना आदि के साथ–साथ महिलाओं पर यौन उत्पीड़न भी दिन–ब–दिन बढ़ गया है। 2009 में ऑपरेशन ग्रीनहण्ट शुरू होने के बाद से इनके कुकृत्य और भी बढ़ गये हैं। ये सिर्फ महाराष्ट्र तक ही सीमित नहीं है। ये पुलिस राज्य की सीमाओं को पार कर कहीं भी जाकर किसी को भी कुछ भी कर सकने में माहिर है। अपनी घृणित कार्यवाहियों को सही ठहराने के लिए बढ़ा–चढ़ाकर झूठा प्रचार करने में भी वे माहिर हैं। वे गड़चिरोली को माओवादी मुक्त जिला घोषित करने के लिए लालायित हैं। इसी मंशे के तहत प्रोफेसर साईबाबा की गिरफ्तारी को हमारी पार्टी तीव्र भर्त्सना कर रही है। उनकी रिहाई के लिए शक्तिशाली जन आंदोलन खड़ा करने देश व विदेशवासियों खास रूप से जनतंत्रप्रेमियों, बुध्दिजीवियों, वकीलों, पत्रकारों, कलाकारो व कर्मचारियों से अनुरोध कर रही है।

महाराष्ट्र राज्य के गड़चिरोली क्रांतिकारी आंदोलन को राज्य के राजधानी मुम्बई और देश राजधानी दिल्ली के साथ जोड़ना महाराष्ट्र पुलिस के लिए कोई नई बात नहीं है। जैसे जैसे क्रांतिकारी आंदोलन का विकास हुआ वैसे वैसे पुलिस अत्याचारों में इजाफा हुआ। इसीके तहत पिछले एक साल से छात्रों व बुध्दिजीवियों की गिरफ्तारियों का सिलसिला शुरू हुआ। शारीरिक रूप से अपंग दिल्ली जवहरलाल नेहरू विश्व विद्यालय के छात्र हेम मिश्रा को गिरफ्तार करके उन पर माओवादी सिक्का लगाकर झूठा आरोप लगाये थे कि माड इलाके में माओवादी नेताओं से मिलने जा रहे थे, हालांकि वे अपनी इलाज के लिए सुप्रसिध्द समाजसेवी बाबा आम्टे द्वारा स्थापित लोकबिरादरी जा रहे थे। उनकी गिरफ्तारी के कुछ ही दिनों बाद दिल्ली के बुध्दिजीवी, राजनीतिक कैदियों की रिहाई के लिए काम करने वाले आंदोलनकारी प्रशांत राही को भी गिरफ्तार करके उक्त कहानी को दुहाराये थे। इन दोनों की गिरफ्तारी के बाद असली खेल शुरू किये। उनके पास सबूत मिलने का बहाना बनाकर दिल्ली को अपना निशाना बना लिया। दिल्ली स्थिति साईबाबा के घर की तलाशी लेना, पूछताछ के बहाने उनके कंप्यूटर व हार्ड डिस्क की चोरी करना आदि के बाद आखिर मई 9 तारीख उन्हीं को गिरफ्तार किया। फर्जी मुठभेड़ों में लाश के रूप में तब्दील इन्सान के पास एके व एसएलआर जैसे हथियारों का सबूत दिखाने वाले खाकी निपुण को हेम मिश्रा व प्रशांत राही के पास माइक्रो चिप मिलना कोई आश्चर्य की बात नहीं है। रास्ते पर चलने वाले को पकड़कर किसी भी झूठी आरोप में फंसाने में माहिर पुलिस को उन दोनों के साथ दो आदिवासी किसानों को जोड़ना कोई आश्चर्य की बात नहीं है। अपनी गिरफ्तारी के पीछे पुलिस की साजिश को लेकर जेल से प्रशांत राही द्वारा मीडिया को जारी बयान को देखने से पता चल जाता है। इन सभी पर फासीवादी यूएपीए लगाये हैं। इतना ही नहीं प्रोफेसर साईबाबा को 14 दिन पुलिस हिरासत के लिए देना अदालतों की संवेदनहीनता का परिचायक है। दूसरों की मदद बिना व्हील चैयर से नहीं चल पाने वाले इन्सान को 14 दिन का पीसीआर देने की बात से हम समझ सकते हैं कि अदालतें किनके इशारों पर चलती हैं।

देश के भीतर पिछले साड़े चार दशकों से निर्मित क्रांतिकारी आंदोलन के पक्ष में खड़े रहनेवाले ये बुध्दिजीवी अपने

दायरे में शोषण और उत्पीड़न के खिलाफ जनता के पक्ष में खड़े होकर लड़ रहे हैं। उनका संघर्ष संवैधानिक है और उनके संगठन भी संवैधानिक तरीके से काम कर रहे हैं। ऐसी संगठनों में से एक है क्रांतिकारी संयुक्त मोर्चा। देश के भीतर चल रहा क्रांतिकारी आंदोलन को वह दृढ़ता से समर्थन दे रहा है। यही कारण है कि राज्य उनके साथ दुश्मनी मोल लिया है। ऑपरेशन ग्रीन हण्ट को 'जनता पर युध्द' बताने वाले सैकड़ों प्रगतिशील व क्रांतिकारी जन संगठनों में से आरडीएफ एक है। केन्द्र एवं राज्य सरकारों को यह बरदाश्त नहीं हो रही है। आरडीएफ नेताओं को गिरफ्तार करना तथा फर्जी आरोपों पर उन्हें जेल भेजना रोज–ब–रोज बढ़ रहा है। उनमें से साईबाबा एक हैं। आरडीएफ के नेता जीतन मरांडी को झारखण्ड सरकार द्वारा मृत्युदण्ड सजा देने की बात सारी दुनिया जानती है। उस फैसले के खिलाफ देश में निर्मित जन आंदोलन के मद्देनजर उक्त फैसले को रद्द करना पड़ा। हाल ही में उत्तराखण्ड के एक आरडीएफ के नेता को गिरफ्तार किये। कुछ ही महीने पूर्व बिहार के आरडीएफ नेता राजकिशोरसिंह की गिरफ्तारी की। ओडिशा के दंडपाणि महंती को 2013 की शुरूआत में अरेस्ट किये। ऐसी कार्यवाहियों में आन्ध्र पुलिस सबसे आगे है। एक साल पूर्व आन्ध्र प्रदेश सरकार ने आरडीएफ पर प्रतिबंध लगा दी। आन्ध्र पुलिस के खाकी गुण्डों ने आरडीएफ के नेता गंटि प्रसादम की नेल्लूर शहर में दिनदहाड़े हत्या की। ऐसी कुख्यात खाकी पुलिस द्वारा प्रोफेसर साई बाबा पर एम्बुश, रेड व लूटमार के केस भी लगाने से कोई आश्चर्य की बात नहीं है। वे चाहे अपंग ही क्यों न हो, कई सारे केसों में वे मुजरिम बन सकते हैं। देश और दुनिया के क्रांतिकारी आंदोलनों के इतिहास को देखने से खाकीधारियों के इन कुकृत्यों पर कोई आश्चर्य नहीं होगा। हमारी पार्टी का दृढ़ विश्वास है कि बेकसूर बुध्दिजीवियों को जन आंदोलनों के जरिये ही बचा पायेंगे। इसके लिए कृत संकल्प होने का अनुरोध आप सबसे फिर एक बार कर रही है।

महाराष्ट्र डीआईजी रवीन्द्र कदम और गडचिरोली एसपी सुवेज हक के अपराधों का कोई सीमा नहीं रह गया है। गोविंदगांव, भटपार, सिंदेसूर, मेड्री, भगवानपुर आदि फर्जी मुठभेड़ घटनाओं में दर्जनों क्रांतिकारियों व आदिवासी किसानों की हत्या की। इस साल फरवरी महीने में बेतकाटि काण्ड में हमारे 7 कॉमरेडों को जहर देकर उनकी किस तरीके से अमानवीय हत्या की गई, उन्हींका बनाया मुखबिर पप्पू गुप्ता द्वारा मीडिया को जारी बयान से जाहिर हुआ है। फरवरी महीने में सीमावर्ती छत्तीसगड राज्य के बीजापुर जिला गर्तुल गॉव पर मुखबिर की सूचना पर हमला करके तीन क्रांतिकारियों की हत्या की। महाराष्ट्र के बुध्दिजीवी सुधीर ढवळे जैसे कलाकारों को जेल में बंदी बना दिया। आरडीएफ ने फर्जी लोकसभा चुनावों का बहिष्कार किया। चुनाव परिणाम घोषित करने के एक सप्ताह पहले साईबाबा की गिरफ्तारी को अचानक हुई घटना नहीं समझना है। चुनाव बाद बनने वाली सरकार की फासीवादी नीतियों का यह गिरफ्तारी मात्र एक नमूना है। आज प्रोफेसर साईबाबा को अरेस्ट किये। कल दूसरे किसी भी बुध्दिजीवी की बारी है। इन गिरफ्तारियों व प्रतिबंधों की भर्त्सना करते हुए क्रांतिकारी जनता व क्रांतिकारी संयुक्त मोर्चा जैसे तमाम क्रांतिकारी जन संगठनों के समर्थन में खड़े होने व प्रोफेसर साई बाबा की रिहाई की मांग पर आंदोलन में तेज करने का आह्वान कर रही है।

– प्रोफेसर साईबाबा की तत्काल रिहाई हो। हेम मिश्रा व प्रशात राही के साथ गिरफ्तार आदिवासी
– किसानों की तत्काल रिहाई हो।
– ऑपरेशन ग्रीन हण्ट के खिलाफ दृढ़ता के साथ संघर्ष करना तथा उसे हराना है।
– जनता के संघर्ष करने का अधिकार व राजनीतिक बंदियों की रिहाई के लिए संघर्ष करो।
– आन्ध्रप्रदेश में आरडीएफ पर प्रतिबंध हटाने संघर्ष करो।

अभय

प्रवक्ता
केन्द्रीय कमेटी
भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)

दिनांकः 13 मई 2014